परियोजना संवाद पत्र

अंक: 3 | 2020

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाईका वित्तपोषित)

भीतर:

- माननीय वन मंत्री, श्री राकेश पठानिया का पीएमयू का पहला दौरा
- गवर्निंग बॉडी मीटिंग
- कोको पीट - नर्सरी माध्यम
- परियोजना गतिविधियों के माध्यम से आजीविका सुधार
- नर्सरी विकास और सीडलिंग उत्पादन
- संस्थागत विकास और माइक्रो प्लानिंग
- जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ (सेल) की स्थापना
- चराई और आवारा पशुओं के मुद्दे
- माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया से सीखना
- मुख्य परियोजना निदेशक की फील्ड विजिट
- कोविड-19: अपनी और दूसरों की सुरक्षा करें
- दिसंबर, 2019 और जून, 2020 के बीच आयोजित कार्यक्रम ...

परियोजना कार्यालय, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-5 हिमाचल प्रदेश
दूरभाष: 0177-2830217 ई-मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

माननीय वन मंत्री श्री राकेश पठानिया का पीएमयू में स्वागत

माननीय वन मंत्री श्री राकेश पठानिया पीएमयू परिसर में 'चिनार' का पौधा लगाते हुए

राकेश पठानिया

वन, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री

हिमाचल प्रदेश, शिमला-171002

संदेश

मैं, जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जाईका) वित्तपोषित 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना' के तीसरे त्रैमासिक संवाद पत्र (न्यूजलेटर) के प्रकाशन पर बधाई देता हूं। मेरा मानना है कि यह पत्रिका परियोजना और स्थानीय समुदाय के सदस्यों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। इस परियोजना से स्थानीय समुदाय सबसे अधिक लाभान्वित होगा।

यह हमारे राज्य में जाईका की पहली वित्त पोषित वानिकी परियोजना है, जो विशेष रूप से अंतिम वन छोर और आश्रित समुदायों के पर्यावरणीय और सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान करते हुए वन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के संवर्द्धन और प्रबंधन पर केंद्रित है। यह परियोजना अपने प्रारंभिक वर्षों में स्थानीय आबादी, अनुसंधान आधारित संगठनों और अन्य सरकारी विभागों के बीच महत्वपूर्ण भागीदारी को सक्रिय करने और इसकी सभी गतिविधियों में रुचि रखने में सक्षम रही है।

मेरा मानना है कि हमारे लोगों के साथ व्यक्तिगत संचार व संपर्क हमारे प्रयासों की स्थायी सफलता सुनिश्चित करने में एक लंबा रास्ता तय करते हैं। यही इस न्यूजलेटर से भी परिलक्षित होता है।

है। परियोजना गतिविधियों के ये त्रैमासिक प्रदर्शन हमारे उन लोगों के साथ लंबे समय तक चलने वाले सहयोग को बनाने के लिए आवश्यक व सबसे अहम साबित होंगे, जो परियोजना के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। मैं इस संवाद पत्र के सफल प्रकाशन और इसके आगामी संस्करणों के लिए परियोजना अधिकारियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। मुझे आशा है कि इस जीवंत टीम के ठोस प्रयास उन्हें हिमाचल प्रदेश में वन सुदूर क्षेत्रों और स्थानीय समुदायों के एक व्यापक खंड के सतत् पर्यावरण और सामाजिक विकास के परिकल्पित उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे।

राकेश पठानिया

नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से.
मुख्य परियोजना निदेशक, (पीआईएचपीएफईएम &एल)

संदेश

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजाविका सुधार परियोजना (जाईका वित्त पोषित) के इस संवाद पत्र के माध्यम से मुझे एक बार फिर आपसे रूबरू होने का मौका मिल रहा है। पिछले दो अंकों में हमने परियोजना से संबंधित कुछ मूलभूत जानकारियां आपके साथ साझा की थी। मुझे खुशी है कि हमारे फील्ड कर्मचारियों ने इस परियोजना से संबंधित कार्यों को लक्ष्य तक पहुंचाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन कोविड–19 की वजह से बहुत सी गतिविधियां छूट गईं या पूरी नहीं की जा सकी। पिछले कुछ महीनों के दौरान कोविड–19 की वजह से विकास की सभी गतिविधियां प्रभावित हुई हैं और निश्चित तौर पर उसका असर इस परियोजना से संबंधित गतिविधियों पर भी पड़ा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि जैसे–जैसे हालात में सुधार हो रहा है, हमें अपनी गतिविधियों को तेजी से आगे बढ़ाने की कोशिश करनी होगी। इस दिशा में हमारा पहला प्रयास यह होगा कि हम पिछले वर्ष के अधूरे रहे गए कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करें। उसके बाद उन कार्यों को चिन्हित करें जो पिछले वर्ष तय किए गए थे, लेकिन किसी वजह से पूरे नहीं किए जा सके।

मुझे आप सभी को बताते हुए हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष हमने 41.78 करोड़ रूपए की राशि खर्च करने का लक्ष्य रखा है। इसमें परियोजना से संबंधित विभिन्न गतिविधियां चलाई जाएंगी। इनके लिए संपूर्ण वार्षिक कार्य योजना से संबंधित पूरी सूचना सभी संबंधित अरण्यपालों व वन मंडल अधिकारियों को जारी भी कर दी गई है। इस वर्ष हमारा लक्ष्य पिछले वर्ष की छूट गई 79 माइक्रो प्लान बनाने के कार्य को जल्द से जल्द पूरा करने का है। इसके साथ–साथ इस वर्ष 150 और माइक्रो प्लान बनाने का भी लक्ष्य है। इस दिशा में हमने परियोजना की तरफ से कुछ सेवानिवृत्त वन अधिकारियों की सेवाएं लेने का निर्णय लिया है। इसलिए मैं विश्वास करता हूं कि परियोजना से संबंधित सभी गतिविधियां समयबद्ध तरीके से पूरी हो पाएंगी। हमने अच्छी गुणवत्ता के माइक्रो प्लान तैयार करने के लिए सभी वन मंडल अधिकारियों को स्थानीय एनजीओ की सहायता लेने को भी कहा है। उम्मीद है कि इससे वीएफडीएस और वन विभाग के बीच बेहतर तालमेल से काम होगा। जैसे–जैसे हमारी माइक्रो प्लान बनती जाएंगी, उन प्लान में निर्दिष्ट कार्यों को करने के लिए चरणबद्ध तरीके से धन उपलब्ध करवाया जाएगा। ये सभी कार्य लोगों की सहभागिता से पूरे किए जाएंगे।

आप सब जानते हैं कि इस परियोजना में स्थानीय लोगों की आजीविका को बढ़ावा देने का भी प्रावधान है और इसके तहत क्षमता निर्माण करने के लिए पूरा वार्षिक कार्यक्रम तय कर लिया गया है।

अब हमें जरूरत है कि जल्द से जल्द स्वयं सहायता समूहों का गठन करें, ताकि इस दिशा में आगे बढ़ा जा सके। मैं सभी वीएफडीएस समितियों के सदस्यों से आग्रह करता हूं कि स्वयं सहायता समूह बनाते समय अन्य बातों के अलावा दो चीजों का विशेष ध्यान रखें। एक, जो स्वयं सहायता समूह बनाए जाएं, उनमें वही लोग शामिल किए जाएं, जिनकी उस कार्य विशेष को करने में रुचि हो। दूसरा, स्वयं सहायता समूह बनाते समय महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाए।

मुझे यह बताते हुए भी हर्ष हो रहा है कि परियोजना का जड़ी–बूटी सेल जल्द ही आपके बीच पहुंच रहा है और इसके माध्यम से जड़ी–बूटियों से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के बारे में आपको अवगत करवाया जाएगा।

मैं रोमांचित हूं कि पौधरोपण के लिए अग्रिम कार्य ठीक से किया गया था और वीएफडीएस व बीएमसी उप समितियां मॉनसून के दोरान पौधरोपण अभियान को उत्साह के साथ निभा रहे थे। लेकिन हमारी जिम्मेदारी यहीं समाप्त नहीं होगी, बल्कि उन लगाए गए पौधों की देखभाल और संरक्षण सभी लोगों को मिलकर करना होगा, तभी हम परियोजना के उद्देश्यों को पूरा कर सकते हैं।

नागेश कुमार गुलेरिया

वन मंत्री, श्री राकेश पठानिया का पीएमयू का पहला दौरा

माननीय वन और युवा सेवाएं व खेल मंत्री, श्री राकेश पठानिया ने 21 अगस्त, 2020 को शिमला के पॉटर्स हिल में जापान अंतरराष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जाईका) द्वारा वित्तपोषित "हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना" के मुख्यालय का दौरा किया। वन मंत्री का कार्यभार संभालने के बाद परियोजना मुख्यालय की यह उनकी पहली यात्रा थी।

श्री राकेश पठानिया ने इस अवसर पर परियोजना के अधिकारियों और अन्य कर्मचारियों के साथ परियोजना को लेकर सभी महत्वपूर्ण विषयों और बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार जैसे महत्वपूर्ण व महत्वाकांक्षी कार्यों में स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने पर जोर दिया। परियोजना प्रबंधन के अब तक के प्रयासों की सराहना करते हुए माननीय वन मंत्री ने कहा कि वे भी फील्ड में जाकर गतिविधियों का खुद जायजा लेंगे। उन्होंने परियोजना कार्यान्वयन की गति को और तेज करने के लिए सबका हौसला बढ़ाया। श्री पठानिया ने कहा कि 2030 तक प्रदेश का हरित क्षेत्र (ग्रीन कवर) मौजूदा 27.2 प्रतिशत से बढ़ाकर 30 प्रतिशत करने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति में इस परियोजना का अहम योगदान होगा।

वन मंत्री ने कहा कि इस परियोजना के सहयोग से वन विभाग की 61 नर्सरियों का सुदृढ़ीकरण किया जा चुका है। इसके चलते विभाग की नर्सरियों की क्षमता 35 लाख पौधे बढ़ी है। उन्होंने कहा कि इस वित्त वर्ष के दौरान 1631 हैक्टेयर भूमि पर पौधरोपण किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि वनों पर निर्भर समुदायों के आजीविका सुधार के दृष्टिगत उन्हें निजी भूमि के साथ–साथ वन भूमि पर भी औषधीय व सुगंधित पौधों की खेती की इजाजत दी जाएगी।

इस परियोजना के लक्ष्य और उद्देश्यों की ओर मुड़ते हुए श्री राकेश पठानिया ने कहा कि परियोजना के तहत सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन व संवर्द्धन, जैव विविधता संरक्षण, आजीविका सुधार सहायता और संस्थागत क्षमता सुदृढ़ीकरण पर जोर रहेगा। उन्होंने भरोसा जताया कि यह परियोजना स्थानीय लोगों, विशेषकर महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के बूते उनके सामाजिक व आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में मील पत्थर साबित होगी।

माननीय वन मंत्री ने खुशी जताई कि परियोजना कार्यान्वयन में सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यालय स्तर पर निगरानी व मूल्यांकन प्रकोष्ठ की स्थापना भी अच्छा कदम है। श्री पठानिया ने भरोसा जताया कि परियोजना की गतिविधियों के चलते जहां मानव–वन्यजीव संघर्ष व जंगलों में आग की घटनाओं में कमी आएगी और अवैध कटान व कब्जों पर नियंत्रण होगा, वहीं भू–क्षरण रुकेगा, जल का संरक्षण होगा और स्थाई आजीविका के वैकल्पिक अवसर पैदा होंगे।

इस बीच, बैठक के दौरान श्री पठानिया ने परियोजना के कुल्लू व रामपुर क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों और अन्य स्टाफ के साथ वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से भी बातचीत की। उन्होंने इस अवसर पर परियोजना द्वारा तैयार की गई तीन पुस्तिकाओं –सामुदायिक विकास प्रशिक्षक नियमावली, जैंडर एक्शन प्लान और फील्ड कार्यकर्ताओं के लिए सूक्ष्म नियोजन दिशा निर्देश– का विमोचन भी किया। श्री पठानिया ने कार्यक्रम की समाप्ति के बाद परियोजना परिसर में 'चिनार' का पौधा लगाया।

बैठक के आरंभ में मुख्य परियोजना निदेशक, श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने माननीय वन मंत्री श्री राकेश पठानिया और अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन), श्री संजय गुप्ता का स्वागत किया। उन्होंने परियोजना से संबंधित सभी विषयों को छूते हुए प्रस्तुति दी। इस अवसर पर प्रधान मुख्य अरण्यपाल (हॉफ), श्री अजय कुमार, परियोजना निदेशक, श्री रमन शर्मा, जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ के निदेशक, डॉ. हर्ष मित्तर व परियोजना प्रबंधन सलाहकार, श्री गिरीश भारद्वाज समेत स्टाफ के अन्य सदस्य उपस्थित थे।

ग्राम वन विकास समिति पदाधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर

23 और 24 जुलाई, 2020 को मंडी व जोगेन्द्रनगर वन मंडलों के तहत आने वाली ग्राम वन विकास समितियों के पदाधिकारियों के लिए वन प्रशिक्षण संस्थान, सुन्दरनगर में प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। इसमें कोविड–19 को लेकर जारी दिशा–निर्देशों का पालन किया गया। शिविर में 49 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण शिविर में वन विकास समितियों के प्रधान, उप प्रधान, सचिव व कोषाध्यक्ष और वन रक्षकों को परियोजना के तहत किए जाने वाले कार्यों का विवरण, साझा वन प्रबंधन का महत्व, कार्यकारिणी पदाधिकारियों के कर्तव्यों व जिम्मेदारियों, रिकार्ड का रख–रखाव, कैश बुक लिखने इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया।

23 जुलाई को मंडी वन मंडल की टौणा देव, बंजरंगबली, हरिओम, बालासुंदरी, आदर्श भंगरोटू व लखदाता पीर और मांडल ग्राम वन विकास समितियों के सदस्यों ने शिविर में भाग लिया। जबकि अगले दिन 24 जुलाई को

जोगिंद्रनगर वन मंडल की बनल, टोरजाजर, चौकी, तनतैहड़ व शिव महादेव ग्रामीण वन विकास समितियों के सदस्यों ने प्रशिक्षण शिविर में शिरकत की। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने परियोजना के इस प्रयास को सराहा।

गवर्निंग बॉडी मीटिंग

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना (जाईका वित्त पोषित) सोसायटी की गवर्निंग बॉडी की तीसरी बैठक 13 मई, 2020 को हिमाचल प्रदेश सचिवालय शिमला की आर्म्सडेल बिल्डिंग के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित की गई। हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन), श्री राम सुभाग सिंह ने इस बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में गवर्निंग बाडी के सदस्यों, मुख्य परियोजना निदेशक, परियोजना निदेशक और परियोजना प्रबंधन इकाई (पीएमयू) शिमला कार्यालय के कर्मचारियों ने भाग लिया। बैठक के आरंभ में मुख्य परियोजना निदेशक एवं सोसायटी के सदस्य–सचिव श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने सोसायटी के अध्यक्ष श्री राम सुभाग सिंह सहित अन्य सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने परियोजना के लक्ष्य, उद्देश्य, रूपरेखा और घटकों पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी। इसके बाद 30 एजेंडा मदों को विचार–विमर्श और निर्णय के लिए बैठक में रखा गया। गवर्निंग बाडी ने कार्यसूची को पूरा करते हुए वित्त वर्ष 2020–21 के लिए परियोजना के वास्ते 41.78 करोड़ रूपए मंजूर किए। नीचे दी गई तालिका में बजट का घटक वार विवरण इस प्रकार है:

वित्त वर्ष 2020–2021 के लिए बजट स्वीकृत

घटक/गतिविधियां	बजट स्वीकृत (रूपए में)	घटक/गतिविधियां	बजट स्वीकृत (रूपए में)
घटक 1: सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन		**घटक 3: आजीविका सुधार सहायता**	
1.1 भागीदारी वन प्रबंधन के लिए तैयारी कार्य	23975000	3.1. समुदाय विकास	23100000
1.2 सहभागी वन प्रबंधन मोड	40841950	3.2 एनटीएफटी आधारित आजीविका सुधार	4000000
1.3 वीएफडीएस और एक्सपोजर विजिट्स	1300000	3.3. गैर एनटीएफटी आधारित आजीविका सुधार	8800000
1.4 विभागीय मोड	139374150	3.3.6. मोबिलाइजर,, वार्ड फैसिलिटेटर, एवं एसएचजी का प्रशिक्षण और एक्सपोजर विजिट	1640000
1.5 एसएमएस, जीपी मोबिलाइजर, फेस्लिटेटर और मैनुअल प्रशिक्षण	700000	**घटक 4: संस्थागत क्षमता सुदृढ़ीकरण**	
1.6 अनुसंधान	1150000	4.1.2. पीएमयू और फील्ड स्तर इकाइयों का सुदृढ़ीकरण	54741000
घटक 2: जैव विविधता संरक्षण		4.1.3. कार्मिकध्संगठन भर्ती	30988000
2.1 वैज्ञानिक जैव विविधता प्रबंधन	12000000	4.1.4. लिंग कार्य योजना और पर्यावरण व सामाजिक विचार	3700000
2.2 एसएमएस, जीपी मोबिलाइजर, फैसिलिटेटर्स और मैनुअल	550000	4.2. क्षमता विकास	7743500
2.3 अनुसंधान	6500000	4.3. निगरानी एवं मूल्यांकन (एमएंडई)	9144000
2.4 समुदाय आधारित जैव विविधता प्रबंधन	12641350	4.5. प्रोक्योरमेंट आफ पीएमसी	10000000
2.5 बीएमसी उप समितियों का प्रशिक्षण और एक्सपोजर विजिट	1030000	**5** आक्समिक निधि	3939000
		6 वेतन	20000000
		वित्तीय वर्ष 2020–21के लिए स्वीकृत बजट	**417857950**

कोको पीट - नर्सरी माध्यम

कोको पीट पोधे उगाने का एक माध्यम है और सामान्य रूप से मिट्टी में सुधार के लिए उपयोग किया जाता है। नारियल के भूसे से बनाया जाने वाला यह उत्पाद पौध उत्पादकों के लिए बहुत ही उपयोगी वैकल्पिक उपजाऊ माध्यम है। इसमें पानी को धारण करने, नमी बनाए रखने, जल निकासी और मिट्टी में वायु को मिलाने जैसी क्रियाओं के लिए पर्याप्त क्षमता है। यह विधि पौधों में लगने वाले रोगों, कीटों और खरपतवार के लिए अधिक प्रतिरोधी है। ग्रीन हाउस, सीडलिंग नर्सरियों, वर्म बेडिंग, हाइड्रोपोनिक्स (ग्रोइंग मीडियम), बागवानी क्रिया–कलापों, फूलों की खेती, कंटेनर गार्डनिंग इत्यादि में कोको पीट माध्यम/विधि का इस्तेमाल किया जा सकता है। कोको पीट, बाजार में संपीड़ित ईंटों (कंप्रेस्ड ब्रिक्स) के रूप में मिलते हैं। ऐसी ईंटों को रखने, बेचने और लाने–ले जाने में आसानी रहती है। इन्हें इस्तेमाल करने से पहले फिर से व्यवस्थित करना होता है।

कोको पीट ईंटों के इस्तेमाल की विधि

नारियल छिलटा (भूसा) ईंटें भिंची (कंप्रेस्ड) हुई मिलती हैं। जब इन्हें फैलाया जाता है तो ये आकार में 5 से 6 गुणा बढ़ जाती हैं। जितनी आवश्यकता हो, इन्हें उतना ही इस्तेमाल के लिए निकालना चाहिए। ईंटों को तोड़कर इनके टुकड़ों को बड़ी बाल्टी में डालें और ईंटों के वजन से 2 से 4 गुणा पानी में अच्छी तरह भिगोएं। नारियल भूसे के टुकड़े रात भर पानी में रहने दें, ताकि ये सुबह तक ढीले हो जाएं और पानी को पूरी तरह से सोख लें। इसके बाद इन्हें करंडी से हिलाएं और पंख की तरह रोवां करें व गूदा नुमा (पल्प) बनाएं। यह सुनिश्चित करें कि यह सारे का सारा एक सार हो जाए। यदि अभी भी यह थोड़ा सूखा है तो और पानी डालें। हां, यदि पूरी तरह नम और एक सार ढीला व फूला है तो यह इस्तेमाल के लिए तैयार है।

यह बहुत महत्वपूर्ण है कि यदि कोको पीट ईंटों का उपचार (ट्रीटमेंट) नमकीन पानी से किया गया है, तो नमक हटाने के लिए इसकी ईंटों को अच्छे से दो बार साफ पानी से धोएं। कोको पीट का उपचार कीट/फफूंदनाशक से भी किया जाना चाहिए।

नर्सरी की क्यारियों में कोको पीट का इस्तेमाल

- पानी की धारण क्षमता को बढ़ाने, वायु को मिट्टी में मिलाने, मिट्टी की फफूंद व जड़ रोगों के खतरों को कम करने की दृष्टि से कोको पीट को सीधे मिट्टी में मिलाया जा सकता है। मिट्टी और कोटो पीट का अनुपात 25:75 होना चाहिए।
- नर्सरी कार्य के लिए कोको पीट, वर्मीकुलाइट/पर्लाइट/वर्मीकम्पोस्ट/फार्म यार्ड खाद और मिट्टी का अनुपात तालिका में दिया गया है:

क्रम स.	पॉटिंग मैटीरियल	पौधे की लंबाई	कोको पीट (%)	वर्मीकुलाइट / पर्लाइट /वर्मीकम्पोस्ट/ फार्म यार्ड खाद (%)	मृदा (%)
1	अंकुरण ट्रे	केवल अंकुरण के लिए	90.100	.	0.10
2	रूट ट्रेनर	6 इंच तक की वृद्धि	60	10	20
3	रूट ट्रेनर	6–12 इंच ग्रोथ	50	20-30	20-30
4ण	पॉली बैग	.	40	10	50
5ण	गनी बैग	.	30	10	60

परियोजना गतिविधियों के माध्यम से आजीविका सुधार

'आजीविका सुधार सहायता' का उद्देश्य गैर–काष्ठ वन उत्पादों (एनटीएफपी) के प्रभावी व स्थाई दोहन और विपणन हस्तक्षेप के माध्यम से वन संसाधनों पर दबाव कम करना और ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देना व आजीविका के साधनों को बढ़ाना है। इससे परिवार स्तर पर संसाधनों की कमी से निजात मिलने में सहायता होगी और सतत् वन संसाधन प्रबंधन के लिए समुदाय के संसाधन आधार एवं निर्माण क्षमता का संवर्द्धन होगा। परिवार/समुदाय उन्मुख आजाविका गतिविधियां, सामुदायिक विकास और एनटीएफपी आधारित आजीविकाओं व गैर–एनटीएफपी आधारित आजीविका गतिविधियों के माध्यम से कवर की जाएंगी।

एनटीएफपी को छोड़कर अन्य पर आधारित परिवार/समुदाय उन्मुख आजीविका गतिविधियों को समान रुचि समूह (सीआईजी) सदस्य, सामुदायिक विकास और आजीविका सुधार योजना (सीडी एंड एलआईपी) तैयार किए जाने के दौरान चिन्हित करेंगे। यह कार्य तब किया जाएगा, जब वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन योजना (एफईएमपी) तैयार की जा रही होगी।

नियोजन अभ्यास के भाग के रूप में सरल व्यवसाय योजना तैयार की जाएगी। सांकेतिक आजीविका विकल्पों की पहचान करने के लिए निम्न आधार शामिल हैं:–

1) गतिविधियां, जो घर पर की जा सकती हैं और सर्दियों या दुर्बल (लीन सीजन) मौसम के दौरान की जा सकती हैं,
2) मौजूदा आजीविका पद्धति से निकटता से जुड़ी हुई हैं,
3) ऐसी गतिविधियां जो मौजूदा मार्केटिंग चैनल में एकीकृत होने की क्षमता रखती हैं और
4) क्लस्टर निर्माण या मौजूदा समूहों के साथ काम करने की क्षमता भी रखती हैं।

परियोजना क्षेत्रों में जिन कुछ गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सकता है, उनमें हथकरघा, बुनाई और कढ़ाई, दुग्ध उत्पाद, मशरूम की खेती, खाद्य प्रसंस्करण, मुर्गी पालन और अन्य कौशल प्रशिक्षण शामिल हैं।

नर्सरी विकास और सीडलिंग उत्पादन

पौधरोपण के दृष्टिगत स्वस्थ पौधे विकसित करने के लिए नर्सरी सुधार और बीजों से निकले पौधों (सीडलिंग) का उत्पादन, परियोजना के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है। इसके तहत 18 डिवीजनों की नर्सरियां (सर्कल स्तर और रेंज स्तर की नर्सरी, दोनों सहित) विकसित और बेहतर की गईं। पीएफएम और वन विभाग दोनों स्तरों पर पौधरोपण के लिए 54 रेंज (51 क्षेत्रीय रेंज और 3 वन्यप्राणी रेंज) के लिए 54 नर्सरियों में 3074059 सीडलिंग पौधे तैयार किए गए। इनमें 758160 कॉनीफर, 1491859 चौड़ी पत्ती वाले, 473720 औषधीय पौधे और 350320 झाड़ी नुमा पौधे शामिल हैं। सारणी में पौधों का मंडलवार विवरण दिया गया है:

डिवीजन	तैयार किए गए पौधों की संख्या					उपलब्ध पौधे	
	कॉनिफर	ब्रॉड लीव्स	मेडिसिनल प्लांट्स	श्रब्स	कुल	मॉनसून प्लांटेशन	विंटर प्लांटेशन
कुल्लू	248820	212005	.	4800	465625	293260	35000
पार्वती	86780	135660	24000	3000	249440	120000	89660
सेराज	39500	57950	.	26400	123850	77650	17000
लाहौल	.	85000	.	.	85000	.	.
मंडी	10000	77954	62540	.	150494	51100	.
सुकेत	19620	81080	115600	48400	264700	101200	.
जोगेंद्रनगर	9810	73866	108580	50900	243156	42800	10000
नाचन	.	51700	.	48400	100100	95400	.
वन्यजीव कुल्लू	28700	57924	.	48400	135024	.	.
बिलासपुर	.	151900	.	.	151900	35700	.
शिमला	71160	155360	.	3620	230140	106200	.
ठियोग	41280	43720	95300	7500	187800	52000	.
चौपाल	38120	120090	.	.	158210	53300	.
रोहडू	51800	.	.	.	51800	.	.
रामपुर	7320	59830	.	48400	115550	6960	35000
आनी	30440	72620	67700	12000	182760	67200	.
किन्नौर	74810	55200	.	48500	178510	51000	.
कुल	**758160**	**1491859**	**473720**	**350320**	**3074059**	**1153770**	**186660**

कुल्लू वन मंडल की मंडावर नर्सरी में तैयार किए जा रहे पौधे

संस्थागत विकास और माइक्रो प्लानिंग

16 वन मंडलों की 16 क्षेत्रीय रेंज और दो वन्यप्राणी रेंज में सोसायटी अधिनियम के तहत 81 ग्राम वन विकास समितियां (वीएफडीएस) और 12 जैव विविधता प्रबंधन उपसमितियां (बीएमसी) गठित की गई हैं।

शुरुआत में, कुल्लू वन मंडल की बसतोरी ग्राम पंचायत और रोहडू वन मंडल की अंटी ग्राम पंचायत के छाजपुर वार्ड की माइक्रो प्लान को मॉडल के रूप में विकसित किया गया था। इसके बाद इस मॉडल के आधार पर सभी वीएफडीएस और बीएमसी उपसमितियों की माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया पूरी की गई। इस बीच, 175 वीएफडीएस और बीएमसी उप–समितियों की पहचान के लिए भी प्रक्रिया पूरी की गई और वीएफडीएस और बीएमसी उप–समितियों के गठन के लिए संबंधित वार्डों में प्रारंभिक कदम उठाने भी शुरू हो गए थे। इसके साथ–साथ अब माइक्रो प्लान तैयार करने के लिए सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है।

क्रम सं	डिवीजन	रेंज	वीएफडीस /बीएमसी	वीएफडीएसध्बीएमसी का नाम
1	शिमला	तारा देवी	5	कंडा, पनेश, शिलडू, तलयाल और रंगोल
2	ठियोग	बलसन	5	ढगाली, अप्पर मुंडू,, काशना, लोअर मुंडू और टिक्कर
3	चौपाल	नेरवा	5	बगना, ढिलुणागुणसा, रिंजट, बड़ैच और हणक अंत्रावली
4	रोहडू	सरस्वतीनगर	5	छाजपुर, संसोग दखरांटू, रूहिल–मलोग, शलाड–नंदपुर, बडियार– भझाणु
5	जोगिंदर नगर	धर्मपुर	5	टोरजाजर, चौकी, बानल, लंगेहार और तनहैड़
6	मंडी	मंडी	7	मांडल, टिक्करी, तरोह, सकरोहा, और धारवाहन
7	सुकेत	सुकेत	5	रोपड़ी, रिंगड़, भंगलेड़ा, थाला और चामुखा
8	नाचन	नाचन	5	करनाला, दाड़ी, बखलोट, सतयोग और सैंज
9	बिलासपुर	घुमारवीं	4	बकरोहा, टुंडवी–फनेड़, रोहिन, कोठी टोबका और अमरपुर
10	आनी	नित्थर	5	कटमोर, खलयार, नौणी, शरशाह, जझर
11	रामपुर	सराहन	5	लबाना–सदाना, धू–कुर्ग, छालड़ी, किनो –1 और कंधार– सुगा
12	पार्वती	भुंतर	5	खोखण–1, पाहनाला, जौली–1, बणसु, खोखण–2
13	कुल्लू	कुल्लू	5	बसतोरी, सारी–1, बल्ह 1 व 2 और सारी–2
		भुट्टी	1	सरली
		पटलीकुहल	1	कटराई–1
14	बंजार	सैंज	3	सरी, तलाड़ा और कनौण
		तीर्थन	3	चकुर्था और थाटी बीड
15	किन्नौर	भावानगर	3	चौरा, बड़ा खंबा और जाणी
		निचार	2	ग्रैंज, निगाणी
16	डब्ल्यूएल कुल्लू	डब्ल्यूएल कुल्लू	6	लोट, जनाहल, बेखली, छाबड़ा, शोगी और न्यूल
		डब्ल्यूएल मनाली	6	तांदला, कराड़सू, बिष्टबेहड़, काईस, सेऊबाग, धारागौत

जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ (सेल) की स्थापना

औषधीय पौधों सहित गैर काष्ठ वन उत्पादों (एनटीएफपीएस) से संबंधित गतिविधियों के समन्वय के लिए परियोजना प्रबंधन इकाई (पीएमयू), शिमला में एक जड़ी–बूटी सेल स्थापित किया गया है। पीएमयू ने एनटीएफपी से संबंधित गतिविधियों के कुशल चालन–संचालन के लिए बाहर से पेशेवर व्यक्तियों को अनुबंध आधार पर तैनात किया है। इनमें निदेशक, प्रबंधक–विपणन, प्रबंधक–उद्यम विकास और एमआईएस एसोसिएट शामिल हैं। औषधीय पौधों के लिए एक ब्रांड बनाना, ब्रांड संवर्धन, औषधीय पौधों की मूल्य श्रृंखला पर काम करना, खरीद व व्यापार में सुविधा प्रदाता की भूमिका निभाना, औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण, संसाधन विकास और सतत् प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए हितधारकों के साथ समन्वय स्थापित करना इस जड़ी–बूटी सेल का प्रमुख कार्य है।

चराई और आवारा पशुओं के मुद्दे

अन्य राज्यों की तरह, हिमाचल में आवारा पशु एक ऐसा मुद्दा हैं, जो अभी तक पूरी तरह से हल नहीं हुआ है। किसान पशुओं के अनुत्पादक होने पर, उन्हें अपने पास नहीं रखना चाहते। सांस्कृतिक कारणों के चलते व्यापारी ऐसे पशुओं को नहीं खरीदते। वहीं, मौजूदा गौसदन भी अपनी क्षमता से ऊपर भरे हैं। परिणामस्वरूप खेतों, सड़कों और जंगलों पर इनका कहर है। इस मुद्दे को हल करने के लिए मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया की अध्यक्षता में 7 जनवरी, 2020 को शिमला के सर्किट हाउस में 'चराई और आवारा पशुओं के मुद्दे' पर एक दिवसीय कार्यशाला और हितधारकों की बैठक भी आयोजित की गई । इस आयोजन में 35 प्रतिभागियों (कृषि विभाग, बागवानी विभाग और पशुपालन विभाग के विषय विशेषज्ञों, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों और गौसदनों की देख–रेख करने वाले प्रतिनिधियों व परियोजना कर्मचारियों) ने भाग लिया। इस दौरान चर्चा में प्रतिभागियों ने इस मुद्दे को हल करने के लिए आगे आते हुए अपने विचार साझा किए। उनकी राय थी कि पशुपालन इस तरह से किया जाए, जो वनों और वन भूमि पर कम से कम दबाव डाले। इसके साथ–साथ यह भी कि वन भूमि को परित्यक्त पशु धन या आवारा पशुओं के चरने से बचाया जाए, क्योंकि ऐसे पशु लगाए गए पौधों और प्राकृतिक रूप से उगी व पुनः उगी वनस्पति को नष्ट करते हैं।

माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया से सीखना

कुल्लू, मंडी और ग्रेट हिमालयन नेचर पार्क (जीएचएनपी) सर्कल्स में चल रही माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया व प्रगति और वहां के फील्ड स्टाफ को आ रही कठिनाइयों की समीक्षा को लेकर कुल्लू में 12–13 फरवरी, 2020 को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें कुल्लू, मंडी और जीएचएनपी सर्कलों से 74 प्रतिभागियों ने शिरकत की। सभी प्रतिभागियों को 8 उप–समूहों में विभाजित किया गया था। प्रतिभागियों को अपने–अपने क्षेत्रों में माइक्रो प्लान को अंतिम रूप देने के दौरान पेश आई बाधाओं को दूर करने के लिए सुझावों के साथ आने के लिए कहा गया था। इस दौरान निम्नलिखित सीख व निष्कर्ष निकलकर सामने आए:

1. माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया से पहले ग्राम पंचायत और वार्ड स्तर पर परियोजना की गतिविधियों से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम का संचालन करना चाहिए
2. माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया उस अवधि के दौरान की जानी चाहिए, जब ग्रामीणों के पास अपना काम कम हो या फिर न के बराबर हो
3. वार्ड चयन : क्षेत्र का चयन फिर से करने की आवश्यकता है
4. डीएमयू/एडीएमयू द्वारा चयनित वार्ड का प्रारंभिक सर्वेक्षण माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया शुरू करने से पहले होना चाहिए
5. सामुदायिक विकास गतिविधियां वार्ड के निवासियों की जरूरतों के अनुसार होनी चाहिए
6. फ्रंट लाइन स्टाफ को वार्ड में जाने से पहले परियोजना तत्व के बारे में अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए
7. ग्रामीणों में वितरण के लिए अच्छी मात्रा में प्रोजेक्ट पैम्फलेट उपलब्ध कराए जाने चाहिए
8. माइक्रो प्लान प्रारूप (टेम्पलेट) हिंदी में होना चाहिए
9. माइक्रो प्लान तैयार करने के लिए आवश्यक जानकारी केवल माइक्रो प्लान फार्मेट के अनुसार एकत्र की जानी चाहिए

10. परियोजना के अतिव्यापी (ओवरलैपिंग) क्षेत्रों में काम करने के लिए कौन जिम्मेदार होगा, यानी वाइल्ड लाइफ (पीए) क्षेत्र के बाहर विभागीय क्षेत्र में

11. परियोजना के सफल नियोजन व कार्यान्वयन के लिए सामाजिक कर्मियों की शीघ्र तैनाती

12. वन मंडलों का फ्रंट लाइन स्टाफ (एफएलएस) पहले ही काम के ज्यादा बोझ में रहता है। ऐसे में परियोजना प्रबंधन एक ऐसे स्वतंत्र अधिकारी की व्यवस्था करे, जो नीचे काम कर रहे विभाग कर्मियों के साथ संपर्क स्थापित किए रहे। इसके चलते माइक्रो प्लान से उभरी एक ही बिंदु पर मिलने वाली गतिविधियों के कार्यान्वयन में सहायता मिलेगी

13. परियोजना क्षेत्र में तैनात एफएलएस को प्रशिक्षण प्रदान करने और राज्य के बाहर की यात्राओं के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए

14. फील्ड स्टाफ के लिए एक्सपोजर विजिट को वित्त वर्ष के फरवरी अंत और मार्च महीने के दौरान हतोत्साहित किया जाना चाहिए। एक्सपोजर और ट्रेनिंग के लिए सबसे उपयुक्त अवधि अप्रैल से जून तक है

मुख्य परियोजना निदेशक की फील्ड विजिट

मुख्य परियोजना निदेशक, श्री नागेश कुमार गुलेरिया (सीसीएफ) ने परियोजना की चल रही गतिविधियों की समीक्षा के लिए किन्नौर, रामपुर, सुकेत, नाचन, मंडी, सिराज, पार्वती और कुल्लू वन मंडलों का दौरा किया। वे परियोजना से सहायता प्राप्त विभिन्न वन नर्सरियों में गए और साथ ही बैच–1 वर्ष के पौधरोपण क्षेत्रों के लिए एफटीयू द्वारा किए गए अग्रिम कार्यों को देखा। श्री गुलेरिया ने अपनी यात्रा के दौरान विभिन्न वीएफडीएस का भी दौरा किया। यह दौरा समुदाय और परियोजना के कर्मचारियों के बीच विश्वास निर्माण के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ। मुख्य परियोजना निदेशक ने अपनी यात्रा के दौरान वन अधिकारियों और फ्रंट लाइन कर्मचारियों के साथ कई बैठकें कीं। उन्होंने कर्मचारियों से कहा कि वे परियोजना से संबंधित किसी भी तरह के प्रश्नों व सहायता के लिए उनसे कभी भी संपर्क कर सकते हैं।

श्री गुलेरिया ने 18 जुलाई, 2020 को वीएफडीएस सरली का दौरा किया। श्रीमती मीरा शर्मा, परियोजना निदेशक पीएमयू कुल्लू, श्री एश्वर्य रॉय, डीएफओ कुल्लू, श्री मनोज कुमार, एसीएफ, श्रीमती बंदना शर्मा, रेंज अफसर, भुट्टी और अन्य फील्ड कर्मचारी इस दौरान उनके साथ थे। बसतोरी पंचायत के तहत वीएफडीएस सरली के प्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने परियोजना कर्मचारियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने फील्ड स्टाफ का आभार व्यक्त किया और उन्हें अपने सहयोग का आश्वासन दिया। मुख्य परियोजना निदेशक ने समुदाय को अपने संबोधन के दौरान कहा कि सरली वीएफडीएस वह पहली सोसायटी है, जहां परियोजना ने अपनी माइक्रो–प्लान तैयारी की शुरुआत की। उनका कहना था कि इस परियोजना के तहत गठित और पंजीकृत पहली वीएफडीएस भी यही है। उन्होंने कहा कि सरली माइक्रो प्लान अन्य वीएफडीएस के लिए अपनी खुद की माइक्रो प्लान तैयार करने के लिए एक मॉडल रही है। उन्होंने माइक्रो प्लान तैयार करने और रिकॉर्ड रखने के ढंग के लिए सरली वीएफडीएस की सराहना की।

श्री गुलेरिया ने आगे कहा कि सरली योजना माइक्रो प्लान तैयार करने की प्रक्रिया में सामुदायिक सहयोग और योगदान का परिणाम है। इसे संदर्भ के लिए अन्य परियोजना क्षेत्रों में दोहराया जाएगा। उन्होंने भरोसा जताया कि भविष्य में बहुत से लोग इस वीएफडीएस की अनुकर्णीय उपलब्धियों को देखने–समझने के लिए परियोजना व इसकी वित्तपोषण एजेंसी–जाईका के प्रतिनिधियों के साथ सरली का दौरा करेंगे। उन्होंने कहा कि कोविड –19 के कारण परियोजना कार्यों में थोड़ी देरी हुई व यह थोड़े धीमे चले, लेकिन अब पौधरोपण कार्य शुरू हो गया है। खासकर प्रशिक्षण कार्यक्रम और एक्सपोजर विजिट भी शुरू हो गए हैं। श्री गुलेरिया ने कहा कि इन गतिविधियों को चलाते वक्त सरकार के कोविड–19 को लेकर समय–समय पर जारी दिशा–निर्देशों का पूरा पालन किया जा रहा है।

किन्नौर डिवीजन में वीएफडीएस सदस्यों के साथ मुख्य परियोजना निदेशक की बातचीत

मुख्य परियोजना निदेशक का सुकेत मंडल की कांगू वन रेंज के तहत भवाना नर्सरी का दौरा

कुल्लू डिवीजन में सरली वीएफडीएस के सदस्यों के साथ मुख्य परियोजना निदेशक बातचीत करते हुए

मुख्य परियोजना निदेशक डीएमयू सिराज (बंजार) के एफटीयू सैंज की छानीनाल नर्सरी में 'देवदार' का पौधा लगाते हुए

कोविड-19: अपनी और दूसरों की सुरक्षा करें

कोविड–19 एक वैश्विक महामारी है, जिसने लाखों–लाख लोगों को प्रभावित किया है। कोरोना एक घातक वायरस है। इस वायरस ने मानव जाति के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। अभी तक इस वायरस का टीका (वेक्सीन) न बन पाने और इलाज की कोई पक्की विधि विकसित न हो पाने के कारण यह संक्रमण और भी खतरनाक हो गया है। इस रोग का कारण बनने वाला वायरस मुख्य रूप से एक संक्रमित व्यक्ति के खांसने व छींकने से बाहर निकलने वाली बूंदों (ड्रापलेट्स) के माध्यम से फैलता है। ये बूंदें हवा में तैरने के लिए बहुत भारी होती हैं और जल्द फर्श या अन्य सतहों पर गिर जाती हैं। यदि आप इस रोग से संक्रमित व्यक्ति के ज्यादा नजदीक आते हैं या फिर दूषित सतह को छूकर अपनी आंखों, नाक या मुंह को छू लेते हैं तो आप भी संक्रमित हो सकते हैं। इस भयानक वायरस से पूरे विश्व में अब तक लाखों लोग संक्रमित हो चुके हैं। कई महीने तो पूरी दुनिया इस कारण थम गई थी। विकास कार्य, रोजगार, उद्योग, निर्माण इत्यादि सब क्षेत्र इससे बुरी तरह प्रभावित हुए। जाईका द्वारा वित्तपोषित 'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना' भी इस कारण प्रभावित हुई। माइक्रो प्लानिंग कार्य, जो इस परियोजना का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक हिस्सा हैं, उन पर भी भारी विपरीत असर पड़ा, लेकिन अब धीरे–धीरे परिस्थितियां बदलने लगी हैं और इन कार्यों ने फिर से गति पकड़नी शुरू कर दी है।

इन स्थितियों में काम करने के लिए यहां कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं। अपने आपको संक्रमित होने से बचाने के लिए एहतियाती उपाय करना आवश्यक है। हर व्यक्ति को इस स्थिति में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसके लिए ये कुछ टिप्स हैं:–

✓ क्या करें:

पहली बात जो आपको ध्यान में रखनी चाहिए, वह है एहतियात। इसके तहत आपको यह करना है:

- ✓ **हैंड वॉश:** अपने हाथ साबुन के साथ नियमित रूप से आधे मिनट तक धोएं। जब आप यात्रा करें, उस दौरान या घर पर जब भी किसी चीज को छुएं, हर बार इसी प्रकार अपने हाथ साबुन के साथ अच्छी तरह से धोएं। इससे आपको संक्रमण से बचने में मदद मिलेगी।
- ✓ **अपने मुंह और नाक को ढकें:** छींकते या खांसते समय अपना मुंह और नाक ढकें और यदि पास खड़ा व्यक्ति भी खांस या छींक रहा है तो यह सुनिश्चित करें कि आपका मुंह और नाक ढके हैं। ऐसा करके आप खुद को इस वायरस से बचा सकते हैं।
- ✓ **बीमार होने पर डॉक्टर से सलाह लें:** यदि आप सामान्य सर्दी, खांसी, मतली, उल्टी, सांस की तकलीफ और थकान से पीड़ित हैं, तो जल्द से जल्द डॉक्टर से परामर्श अवश्य करें। इनमें से कोई भी लक्षण इस बात का संकेत हो सकता है कि आप वायरस से पीड़ित हैं।
- ✓ **घर में रहें:** भीड़–भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें। सुनिश्चित करें कि आपने यात्रा करते समय प्रदूषण रोधी मास्क पहना है और शरीर के अन्य अंगों को भी ढककर रखा है। घर के अंदर रहना एक सुरक्षित विकल्प है।

X क्या न करें:

एक वायरस जो स्वाइन फ्लू और वायरल बुखार की तरह घातक है, का अत्यंत संवेदनशीलता के साथ इलाज करने की आवश्यकता है, लेकिन हम आमतौर पर ऐसा नहीं करते। ऐसे में आपको यह–यह नहीं करना है:

- X **किसी के साथ निकट संपर्क से बचें:** किसी के करीब न जाएं, विशेष रूप से स्पर्श करने या करीब से हंसने से बचें। इसके अलावा, दोस्तों या परिवार के साथ बाहर जाने पर प्रदूषण–रोधी मास्क का उपयोग करें। जब तक इस घातक वायरस का प्रकोप समाप्त न हो जाए, तब तक शारीरिक दूरी बनाए रखना है और किसी भी चीज को छूने से बचना है।
- X **हर कहीं न थूकें:** थूकने से वायरस का प्रसार बढ़ सकता है। सार्वजनिक स्थान पर और घर में थूकने से बचें। इसके अलावा, सर्दी और खांसी से पीड़ित किसी बीमार व्यक्ति के करीब जाने से बचें।
- X **पब्लिक ट्रांसपोर्ट के इस्तेमाल से बचें:** कैब, फ्लाइट, बस और ट्रेन से यात्रा करना आपको संक्रमित कर सकता है। प्रदूषण–रोधी मास्क का प्रयोग करें और हर जगह अपने साथ हैंड सैनिटाइजर रखें। आप अपने वाहन से यात्रा करने पर विचार करें और सार्वजनिक परिवहन से बचें।
- X **अपने डाक्टर खुद न बनें:** यदि आप सूखी खांसी, पीठ दर्द, मतली और सांस की तकलीफ से पीड़ित हैं, तो अपने आप दवा तय करने के बजाय डॉक्टर से परामर्श करें। खुद दवा तय कर उसका सेवन करना घातक हो सकता है।
- X **घबराएं नहीं, इसे आराम से लें:** मनुष्य डर की स्थिति में अक्सर गलत निर्णय लेने और स्व–दवा उपयोग की ओर बढ़ता है, लेकिन इससे बचना है और अपनी स्वच्छता का ध्यान रखना है। यानी नियमित रूप से हाथ धोने हैं, प्रदूषण रोधी मास्क का उपयोग करना है और यदि आप बीमार हैं तो डॉक्टर से तुरंत सलाह लेनी है।
- X **अपना चेहरा मत छुएं:** बार–बार अपने चेहरे, नाक और मुंह को न छुएं। इससे वायरस के संक्रमण व इसके फैलने के जोखिम से बचा जाता है।

दिसंबर, 2019 और जून, 2020 के बीच आयोजित कार्यक्रम/बैठकें/कार्यशालाएं/प्रशिक्षण कार्यक्रम

- 30 दिसंबर, 2019 को परियोजना की कार्यकारिणी की 9वीं बैठक
- 7 जनवरी, 2020 को सर्किट हाउस, शिमला में चराई और आवारा पशुओं के मुद्दों पर एक दिवसीय कार्यशाला व हितधारकों की बैठक
- 3–4 जनवरी, 2020 को वन प्रशिक्षण संस्थान (एफटीआई) चायल में फ्रंटलाइन कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय लिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम
- 5 फरवरी, 2020 को वाइल्डलाइफ विंग, कुल्लू के सम्मेलन हॉल में कुल्लू और जीएचएनपी सर्कल की एक दिवसीय सर्कल स्तरीय समीक्षा कार्यशाला/बैठक
- 12–13 फरवरी, 2020 को डब्लूएल कुल्लू के सम्मेलन हॉल में कुल्लू, मंडी और जीएचएनपी सर्कल्स के फील्ड स्टाफ के लिए माइक्रो प्लानिंग प्रक्रिया पर दो दिवसीय समीक्षा व उन्मुखीकरण प्रशिक्षण कार्यक्रम
- 24–25 फरवरी, 2020 को एफटीआई चायल में वन विभाग के फ्रंटलाइन स्टाफ के लिए जीआईएस एप्लीकेशन को लेकर दो दिवसीय प्रशिक्षण
- 28 फरवरी, 2020 को कृषि सहकारी कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान, सांगटी, शिमला में लेखाकार सह कंप्यूटर ऑपरेटरों के लिए खातों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
- 17 मार्च, 2020 को पीएमयू कार्यालय, कुल्लू में वार्ड फेसिलिटेटर्स के लिए एक दिन का ओरिएंटेशन कार्यक्रम

जून–जुलाई, 2020 के दौरान, कुल्लू सर्कल के तहत पांच प्लांटेशन साइट्स को फोटो मॉनिटरिंग के लिए चुना गया। इस प्रकार इसके तहत, कुल्लू वन मंडल और कुल्लू वाइल्ड लाइफ मंडल में 2–2 और पार्वती वन मंडल की एक साइट आएगी। भविष्य में इन पांचों साइट्स की फोटो मॉनिटरिंग परियोजना का निगरानी और मूल्यांकन सेल करेगा।

वीएफडीएस सरली के ट्रीटमेंट प्लाट की फोटो मॉनिटरिंग के लिए साइट

कुल्लू वन मंडल की पतलीकूहल रेंज में वीएफडीएस कटराईं की फोटो मॉनिटरिंग साइट

वाइल्ड लाइफ डिवीजन, कुल्लू के तहत बीएमसी चौबरा की फोटो मॉनिटरिंग साइट

वाइल्ड लाइफ डिवीजन, कुल्लू के तहत बीएमसी न्यूल की फोटो मॉनिटरिंग साइट

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें:-

मुख्य परियोजना निदेशक, जाईका वानिकी परियोजना,

पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला–5, हिमाचल प्रदेश। दूरभाषः 0177–2830217, ई.मेलः cpdjica2018hpfd@gmail.com

* * *

परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई,

जाईका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाषः– 01902–226636, ई.मेल: pdjicakullu@gmail.com

* * *

उप परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्थागत क्षमता उत्थान इकाई,

जाईका वानिकी परियोजना, रामपुर। दूरभाषः 01782–234689, ई.मेलः dpdrmp2018@gmail.com

प्रकाशन :– अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई, हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और आजीविका सुधार परियोजना, कुल्लू